महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
ज्ञान शांति मैत्री
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 ईमेल-bsmirgae@gmail.com

---

रूस में हिंदी भाषा के साथ भारतीय संस्कृति व इतिहास जानने की ललक बढ़ी

हिंदी विवि में रूस से आयी डॉ. इंदिरा गाजिएवा से विशेष साक्षात्कार

भारतीय संस्कृति, उसकी कई भाषाएँ एवं साहित्य की पहचान **रूस** में भी हो रही है। सभी को मालूम है कि हिंदी भाषा और उसका साहित्य रूसी भाषा में अनूदित हुआ है। हिंदी भाषा और साहित्य की वर्तमान स्थिति के बारे में कहा जाए तो आजकल **रूस** में हिंदी भाषा और साहित्य की छः विश्वविद्यालयों में पढ़ाई हो रही है उनमें से चार मास्को में, एक व्लादिवोस्टोक में (फ़ार-ईस्ट विश्वविद्यालय में) और एक सांक्ट-पिटर्स्बर्ग के सरकारी विश्वविद्यालय में है। इसके अलावा मास्को में एक बोर्डिंग-स्कूल है जहाँ पिछले पचपन साल से हिंदी पढ़ाई जा रही है। उक्त बातें महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्विद्यालय में विदेशी शिक्षकों के लिए आयोजित

अभिविन्यास कार्यक्रम में भाग लेने मास्को, **रूस** से आयी और रूसी सरकारी मानविक विश्वविद्यालय, मास्को में हिंदी पढ़ाने वाली शिक्षिका डॉ. इंदिरा गाज़िएवा ने एक विशेष वार्तालाप में कही।

यह पुछने पर कि **रूस** के युवाओं में हिंदी के प्रति कैसा आकर्षण है, उन्होंने बताया कि पहले सोवियत संघ के गणतंत्रों में बहुत से हिंदी तथा उर्दू स्कूल थे। इन भाषाओं को उच्च स्तर की पढ़ाई होती थी। रूसी लोगों में हिंदी का आकर्षण उत्साहवर्धक है। जिन लोगों ने 1990 तक तक स्कूल या विश्वविद्यालयों में हिंदी सीखी वे थोड़ा-बहुत हिंदी जानते, समझते है। **रूस** में भाषा पढ़ाने के लिए व्याकरण-अनुवाद के ढाँचे का इस्तेमाल किया जाता रहा है। विद्यार्थियों को व्याकरण के विधि, टेक्स्ट को रवानी से पढ़ना, प्रश्न-उत्तर का अभ्यास करना, भारतीय लेखकों की रचनाएँ पढ़ना और अनुवाद करना सीखाया जाता है। सोवियत संघ में अनेक भारतीय लेखकों की रचनाओं का रूसी में अनुवाद किया गया है उनमें प्रेमचंद, अमृतलाल नागर, वृंदावनलाल वर्मा, भीष्म साहनी, जयशंकार प्रसाद आदि के साहित्य का समावेश है। रूसी संस्कृति तथा विज्ञान अकादमी की गतिविधियों के बारे में पूंछने पर इंदिरा कहती है कि रूसी संस्कृति तथा विज्ञान अकादमी में एक बड़ा साहित्य विभाग है जिसमें रूसी के महान विद्वानों ने भारतीय एवं हिन्दी साहित्य का अनुसंधान किया। इन में प्रो. एवगेनीय चेलिशेव, प्रो.अन्ना सुवोरोवा, प्रो. लूदमीला वासिल्येवा, प्रो. प्रीगारीना, प्रो. नाताल्या साज़ानोवा प्रमुख है। उन्होंने हिंदी और भारतीय साहित्य के बारे में काफी निबंध लिखे। प्रो. गूज़ेल स्त्रेलकोवा ने हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, महाश्वेता देवी के उपन्यासों का रूसी भाषा में अनुवाद कर रूसी विद्यार्थियों को भारतीय साहित्य से परिचित कराया। सोवियत संघ के समय हर गण-तंत्रों में बड़े-बड़े प्रकाशन भवन थे जिन्होंने भारतीय और हिन्दी लेखकों एवं कवियों की रचनाओं का अनुवाद किया था।

इंदिरा ने रूसी युवाओं में हिंदी की गहरी रूची के बारे में बताया कि 1990 के बाद हालात बदल गये, सोवियत संघ का समय खत्म हो चुका और इन्डोलोजी का अनुसंधान कम हो गया। परंतु युवाओं में वैज्ञानिक दृष्टि और विकसित हुई है। मौखिक रूप से हिंदी सीखने का महत्व बढ़ा है। जल्दी हिंदी सीखने के लिए युवा इंटरनेट का बखुबी इस्तेमाल कर रहे है। शिक्षक कंप्यूटर या स्काइप द्वारा पढ़ाने और टेलीकम्यूनिकेशन्स सिस्टम का उपयोग करने लगे है। रूसी लोग “फ़क्शनल” भाषा का प्रयोग करने लगे है। सोवियत संघ में लोग अच्छी तरह भाषा सीखते थे पर बाहर जाने का मौक़ा नहीं मिलता। अब हालत दूसरी है। रूसी लोग साल भर बाहर जाते है और विदेशी भाषा जल्दी सीखना चाहते हैं। रूस भाषा पढ़ने में नया ढाँचा आया उसका नाम है

– इन्टेसिव एंड लिंगो-कल्चरल मेथड ऑफ टीचिंग *(Intensive and lingo-cultural method of teaching).* आधुनिक विद्यार्थी भाषा सीखने में अनेक प्रकार चुन सकते हैं। अमरिकन और अँग्रेज़ी हिंदी पाठ्य-पूस्तकें छपे हुए हैं जिन के द्वारा लोग जल्दी हिंदी पढ़ाई जाती हैं। जैसे "टीच योर सेल्फ़ हिन्दी" प्रोफ़ेसर रूपर्ट स्नेल की है और "कोलोकियल हिन्दी" प्रोफ़ेसर तेज भाटिया की। **रूस** में ऐसे भारतीय अध्यापक लोगों की पुस्तकें हैं जैसे हिन्दी पाठ्य-पुस्तकें प्रोफ़ेसर कविता कुमार जी, प्रोफ़ेसर मोहिनी राओ जी, प्रोफ़ेसर आशुतोश प्रकाश शुक्ला, प्रोफ़ेसर वीना शर्मा से लिखी हुईं मिलती हैं। विद्यार्थी अनेक भारतीय लेखकों की रचनाएँ बिने मुश्किल से इंटरनेट के माध्यम से पढ़ते हैं।

कंप्यूटर में विद्यार्थियों को अनेक प्रोग्रम मिलते हैं जिस से वे हिंदी सीख पाते हैं। जैसे "रोज़ेट्टा स्टाउन" के वेब-साईट में लोग 2000 शब्दों को याद कर सकते हैं। साहित्य के प्रति लोगों की रूचि के बारे में पुछे गये सवाल पर इंदिरा ने कहा कि विदेशी भाषा तीव्र गति से सीखने की लोगों में लालसा तो है। परंतु लोग साहित्य पढ़ना नहीं चाहते हैं या कम पढ़ते हैं। यह हालत न केवल मेरे विद्यार्थियों की है जो हिन्दी सीखते है, बल्कि पूरे **रूस** की है। रूसी जवान रूसी साहित्य भूलने लगे। वे साहित्य संक्षिप्त रूप में जानना चाहते हैं। उनको जासूसी कहानी या विज्ञान कथा या नए फ़ैशन के लेखकों की रचनाएँ पढ़ना पसंद हैं जो साहित्यिक भाषा में नहीं लिखी हुई हैं सिर्फ़ मौखिक भाषा में या "स्लेंग" में।

<u>ब्लॉग के सहारे होते है रूबरू</u> रूसी सरकारी मानविकी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने "hindi_lesson.livejournal.com" ब्लॉग बनाया जिन के द्वारा वे हिन्दी भाषा और साहित्य के बारे में ज्ञान अर्जित करते हैं। इस वेब-साईट में स्कूल के छात्र-छात्राओं के लिए हिन्दी में छोटी कहानियों से भरी हुई हैं जैसेः हिन्दी पाँचतंत्र और भीष्म साहनी की कहानियाँ जिन के लिए हम लोगों ने कई अभ्यास किये ताकि हिन्दी सीखनेवाले लोग उत्सुकता से पढ़ सके।

<u>भारतीय संस्कृति से है खास लगाव</u>

डॉ इंदिरा गाज़िएवा कहती है कि रूसी छात्रों में भारतीय साहित्य के अलावा संस्कृति से खास लगाव है। सितंबर 2011 साल में बी ए करने कुल 15 छात्र आए हैं। हिंदी नोकरी पाने के लिए तो सीखते ही है, परंतु दिलचस्प बात है कि उनमें भारतीय इतिहास और संस्कृति को जानने की ललक दिखती है। रूसी विद्यार्थी बी ए ख़त्म करने के बाद किसी

भारतीय विश्वविद्यालय में जाते हैं एम ए करने के लिए। क्योंकि **रूस** में उन्हें हिंदी में एम ए या एम फिल की सुविधा नहीं मिल पाती।

शैक्षणिक व सांस्कृतिक सहयोग को मिली नई पहचान डॉ गाज़िएवा का कहना है कि उनके महामहिम राष्ट्रपति दमीत्रीय मेद्वेदेव जी ने इक्कीसवीं सदी में रूसी-भारत की मैत्री और साझेदारी के लिए पहल और इस साझेदारी को नई दिशाएँ प्रदान की है। इससे न केवल आर्थिक-व्यापार संबंध प्रगाढ हुए बल्कि शैक्षणिक व सांस्कृतिक सहयोग में भी अवसर खोजने शुरू हुए है। अंत में भारत-रूस मैत्री को प्रगाढ़ बनाने की बात कहते हुए उन्होंने कहा कि रूसी जनता भारत को सदा प्यार करती रहेगी और मुझे आशा है कि हमारे देशों के बीच वैज्ञानिक-सांस्कृतिक संबंध और मजबूत होंगे।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी